

S.C.No.—2101402

B.A. EXAMINATION, 2024

(Main) (as per New Scheme w.e.f. 2021)

(Fourth Semester)

HINDI (Compulsory)

20UHND401-C

Hindi Gadya Sahitya

Time : 3 Hours

Maximum Marks : 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

8×2=16

(i) जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित दो उपन्यासों के नाम लिखिए ।

(ii) 'नमक का दरोगा' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

(12403) II-2101402 (UG158)

P.T.O.

(iii) प्रसाद जी के तीन कहानी संग्रहों के नाम

लिखिए । ~~शान्ति~~ ~~चन्द्र~~

(iv) 'परदा' कहानी का नायक कौन है ?

(v) 'लोभ और प्रीति' निबन्ध में किस प्रकार की
शैली का प्रयोग हुआ है ?

(vi) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी विरचित निबन्ध
'कुटज' किस प्रकार का निबन्ध है ?

(vii) 'आधी दुनिया का श्रम और भूमण्डलीकरण'
लेख की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए ।

(viii) महादेवी वर्मा को किस रचना पर ज्ञानपीठ
पुरस्कार प्रदान किया गया ?
21/11/11

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक खण्ड
से एक प्रश्न करना अनिवार्य है : $10 \times 4 = 40$

(क) 'त्यागपत्र' उपन्यास का सार अपने शब्दों में
लिखते हुए, उसके शीर्षक की सार्थकता को
स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली पर प्रकाश
डालिए ।

(ख) 'आकाशदीप' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'वापसी कहानी' के आधार पर गजाधर बाबू के
चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व
पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

आचार्य हजारो प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबन्ध

'कुटज' का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

(घ) 'महादेवी वर्मा' का साहित्यिक परिचय दीजिए ।

अथवा

प्रभा खेतान द्वारा विरचित 'आधी दुनिया का श्रम
और भूमण्डलीकरण' लेख को तात्त्विक समीक्षा
कीजिए ।

3. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग

व्याख्या कीजिए-

8×3=24

(क) "आपने उन्हें समझा तो दिया ही होगा । जरा

सेहत का ख्याल रखा करें और दुनिया का भी

लिहाज रखना चाहिए । आप जानिए, बहू-बेटियों

की चलन की रीति-नीति हुआ करती है । अपने

तो वही पुराने अकीदे हैं । अपना कुल-शील

चला जाता है, वह न निभा तो फिर क्या रह

गया । जरा ये बातें समझा देनी चाहिए । मैं

अपनी तरफ से थोड़ा बहुत करता हूँ, लेकिन

आप जानिए, आपकी बात का मुझसे कहीं
अधिक असर होगा ।"

(ख) मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं
मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, उस लोक
में विश्वास नहीं करता, पर मुझे अपने हृदय के
दुर्बल अंश पर श्रद्धा हो चली है ।

(ग) "उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों
के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र है ।

जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिन्दूर
डालने की अधिकारी है, समाज में उसकी
प्रतिष्ठा है, उनके सामने वह दो वक्त भोजन की
धाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती
है । वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी
हुई है कि अब वही उनकी सम्पूर्ण दुनिया बन
गई है ।"

(घ) "कुटज के ये सुन्दर फूल बुरे तो नहीं हैं । जो कालिदास के काम आया हो, उसे ज्यादा इज्जत मिलनी चाहिए, मिली कम है । पर इज्जत तो नसीब की बात है । रहीम को मैं बड़े आदर के साथ स्मरण करता हूँ । दरियादिल आदमी थे, पाया सो लुटाया । लेकिन दुनिया है कि मतलब से मतलब है, रस चूस लेती है, छिलका और गुठली फेंक देती है । सुना है, रस चूस लेने के बाद रहीम को भी फेंक दिया गया था ।"

(ङ) बरबरता की पहली सीढ़ी से सभ्यता की अन्तिम सीढ़ी तक युद्ध मनुष्य जाति का साथ देता आया है । मनुष्य ने अपनी संकीर्ण व्यक्तिगत स्वार्थ भावना का पहला अभिनन्दन भी इसी से किया

और लोकगत पदार्थ-भावना की अन्तिम आराधना
भी इसी से करने जा रहा है । समय के आगे
बढ़ने के साथ ही उसकी पत्थर की भारी
तलवार, लकड़ी, लोहे और इस्पात की बनते-बनते
अब पहले से सहस्रगुण अधिक भयानक अस्त्र
में परिणत हो गई, दूर के शत्रु को वेधने वाले
कम तीक्ष्ण बाण मशीनगन के पूर्वज बन बैठे ।